93

इतिहास के तीन सबसे महत्वपूर्ण दिन

बाइबल पाठ #41

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।
  ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमश:)।
    10. यीशु की देह को गाड़ना।
      क. उसकी मृत्यु देखी गई (मत्ती 27:55, 56; मरकुस 15:40, 41; लूका 23:49)।
      ख. उसकी मृत्यु की पुष्टि (यूहन्ना 19:31-37)।
      ग. उसकी देह गाड़ी गई (मत्ती 27:57-60; मरकुस 15:42-46; लूका 23:50-54; यूहन्ना 19:38-42)।
      घ. उसका गाड़ा जाना देखा गया (मत्ती 27:61; मरकुस 15:47; लूका 23:55, 56क)।
  झ. शनिवार: यीशु की मृत्यु से अगला दिन ।
    1. उसके चेले: डरे हुए (लूका 23:56ख; देखें यूहन्ना 20:19क)।
    2. उसके शत्रु: आशंकित (मत्ती 27:62-66)।
VIII. यीशु का पुनरुत्थान, दर्शन, और स्वर्गारोहण।
  क. रविवार: यीशु के पुनरुत्थान का दिन।
    1. खाली कब्र।
      क. स्त्रियां और खाली कब्र (मत्ती 28:1-8; मरकुस 16:1-9; लूका 24:1-11; देखें लूका 24:22-24; यूहन्ना 20:1)।

परिचय

हमारा पिछला पाठ यीशु की मृत्यु के साथ समाप्त हुआ था। उसकी *मृत्यु*-जिससे हमारा उद्धार सम्भव होता है (रोमियों 5:10)-सुसमाचार के तीन भौतिक तथ्यों में से एक है (1 कुरिन्थियों 15:1, 3)। उसका *गाड़ा जाना* और उसका *पुनरुत्थान* दूसरे तथ्य हैं (1 कुरिन्थियों 15:4)। इस प्रस्तुति[1] का आरम्भ क्रूस पर यीशु की अंतिम बातों से होगा, एक नई कब्र में उसके गाड़े जाने के बारे में बताया जाएगा और समाप्ति उसके जी उठने के

आरम्भिक दृश्यों के साथ होगी। इस अध्ययन में *शुक्रवार* के अंतिम घण्टों, जब मसीह की मृत्यु हुई; शनिवार, जब उसकी देह कब्र में रखी गई थी; और *रविवार* की बात बताई जाएगी, जब वह मुर्दों में से जी उठा था। इन तीन दिनों में होने वाली बातों के हमारी आशा का आधार होने के कारण ये तीन दिन इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण हैं।

शुक्रवार के अंतिम घण्टे: निराशा का समय (मत्ती 27:55-61; मरकुस 15:40-47; लूका 23:49-56क; यूहन्ना 19:31-42)

विश्वासी स्त्रियां

पिछले पाठ में हमने ''यीशु के क्रूस के पास खड़ी'' चार स्त्रियों, उसकी माता; उसकी माता की बहन (शायद सलोमी); मरियम, क्लोपास की पत्नी; और मरियम मगदलीनी (यूहन्ना 19:25) को देखा था।[2] जब यूहन्ना मसीह की माता को वहां से ले गया (यूहन्ना 19:27), तो दूसरी स्त्रियां भीड़ में चली गईं। पाठ के आरम्भ में हम पढ़ते हैं:

> वहां [गुलगुता पर] बहुत सी स्त्रियां, जो गलील से यीशु की सेवा करती हुई उसके साथ आई थीं, दूर से यह देख रही थीं। उन में मरियम मगदलीनी और याकूब और योसेस की माता मरियम [क्लोपास की पत्नी] और [सलोमी] जब्दी के पुत्रों की माता थीं (मत्ती 27:55, 56; देखें मरकुस 15:40, 41; लूका 23:49)।

ये विशेष स्त्रियां, जिन्होंने गलील में प्रभु की सेवा की थी (मरकुस 15:41; देखें लूका 8:2, 3), उसकी मृत्यु के समय उसे छोड़कर नहीं गई थीं। वे अन्त तक क्रूस के पास ही थीं और कब्र पर सबसे पहले पहुंची थीं। कम से कम ये दोनों उसकी मृत्यु (मत्ती 27:55, 56; मरकुस 15:40, 41), उसके गाड़े जाने (मत्ती 27:61; मरकुस 15:47; लूका 23:55) और उसके जी उठने की गवाह थीं (मत्ती 28:1-10)।

बेमेल अगुवे

यीशु की मृत्यु सूरज छिपने से कुछ घण्टे पहले लगभग तीन बजे शाम को हुई (देखें मत्ती 27:45-50), जो सब्त का आरम्भ होना था। एक नये दिन के आने का अनुमान लगाते हुए, ''इसलिए कि वह तैयारी का दिन था, यहूदियों [यहूदी अगुओं] ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगें तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं, ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें, क्योंकि सब्त का दिन बड़ा दिन था'' (यूहन्ना 19:31)। यह आयत काफ़ी लम्बी है, इसलिए इसकी व्याख्या करना आवश्यक है।

''*तैयारी का दिन।*''सब्त से पहले का दिन (छठा दिन, जो हमारे शुक्रवार की तरह है) सब्तवां (सातवें दिन, जो हमारे शनिवार की तरह है) की तैयारी का दिन था।

''*ताकि सब्त के दिन वे क्रूसों पर न रहें।*''व्यवस्था में कहा गया था:

> यदि किसी से प्राणदण्ड के योग्य कोई पाप हुआ हो जिससे वह मार डाला जाए, और तू उसके शव को वृक्ष पर लटका दे, तो वह शव रात को वृक्ष पर टंगा न रहे, अवश्य उसी दिन उसे मिट्टी देना, क्योंकि जो लटकाया गया हो वह परमेश्वर की ओर से शापित ठहरता है; इसलिए जो देश तेरा परमेश्वर यहोवा तेरा भाग करके देता है उसकी भूमि को अशुद्ध न करना (व्यवस्थाविवरण 21:22, 23; देखें यहोशू 8:29; 10:26, 27)।

''वृक्ष पर लटकाना'' इस पद में गले में रस्सी डालकर लटकाना या खूंटे से बांध कर क्रूस पर चढ़ाना हो सकता है, पर यहूदी इस पद को क्रूस पर चढ़ाने के लिए भी इस्तेमाल करते थे (देखें गलातियों 3:13)। फिर तो व्यवस्थाविवरण के अनुसार उस शुक्रवार के दिन गुलगुता में मरने वालों को सूर्यास्त से पहले दफ़नाया जाना आवश्यक था।[3]

''*क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था।*''मूल शास्त्र में है ''उस सब्त का दिन महान था।'' NIV में इसका अनुवाद ''एक विशेष सब्त'' किया गया है। सभी सब्त महत्वपूर्ण थे, पर फसह पर आने वाला एक सब्त सबसे विशेष था। इसके अलावा, इस विशेष सब्त का अतिरिक्त महत्व था, क्योंकि यह सप्ताह भर चलने वाले अखमीरी रोटी के पर्व का आरम्भ था।[4]

''*पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगें तोड़ दी जाएं।*''रोमी लोग इस बात को प्राथमिकता देते थे कि मृत्युदण्ड पाने वाला कई दिनों तक कष्ट सहता रहे, पर परिस्थितियों की मांग पर वे दण्ड पाने वालों की टांगें तोड़कर उन्हें जल्दी मार सकते थे। क्योंकि क्रूस पर चढ़ाए गए लोगों को सांस लेने के लिए अपने शरीर को खींचना पड़ा था,[5] टांगें तोड़ दिए जाने पर वे सांस रुकने के कारण जल्दी मर गए।

''*और वे उतारे जाएं।*''यहूदी अगुओं ने न केवल यह मांग की कि रोमी क्रूस पर उनकी मृत्यु जल्दी करवाएं, बल्कि वे यह भी चाहते थे कि रोमी उनके शरीरों को उतार दें। यहूदी धर्मगुरु लाशों को छूकर अपने आप को औपचारिक रूप से अशुद्ध नहीं बनाना चाहते थे (गिनती 19:11)। रोमियों ने निश्चय ही गाड़े जाने का स्थान बना रखा था, जहां अपराधियों की लाशें एक-दूसरे के ऊपर बिना किसी पहचान के फैंक दी जाती थीं।

एक बार फिर, यहूदी अगुओं ने अपने कपट और बेमेलपन को दिखाया। ''सब्त के प्रभु'' को वे क्रूस पर चढ़ाने से नहीं हिचकिचाए थे (मत्ती 12:8; मरकुस 2:28), परन्तु अब उन्हें डर था कि कहीं वे सब्त को अशुद्ध न कर दें।

विवेकी सिपाही

पिलातुस ने यहूदियों की विनती मानकर कलवरी में आदेश भेज दिया। ''सो सिपाहियों ने आकर पहिले की टांगें तोड़ीं, तब दूसरे की भी, जो उसके साथ क्रूसों पर चढ़ाए गए थे'' (यूहन्ना 19:32)। यह वीभत्स कार्य किसी भाले या भारी मोगरे से किया गया। ''परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें

न तोड़ीं'' (यूहन्ना 19:33)।

सिपाहियों ने केवल यह ही नहीं माना कि मसीह मर चुका है, बल्कि यह *सुनिश्चित* करने के लिए कि वह मर गया है, ''सिपाहियों में से एक ने बरछे से उसका पंजर बेधा'' (यूहन्ना 19:34क)। यह, यह देखने के लिए कि यीशु को झटका लगता है या नहीं, उसके मांस पर नोचना नहीं था। भाला उसकी पसली और उसकी छाती के अन्दर बेधा गया, जिससे इतना बड़ा घाव बन गया कि उसमें हाथ डाला जा सकता था (यूहन्ना 20:25, 27)। क्योंकि यह देखने की ज़िम्मेदारी कि क्रूस से उतारने से पहले क्रूस पर चढ़ाया गया व्यक्ति मर चुका है, सिपाहियों की थी, भाला पसलियों के बीच में दिल के अन्दर बेधा गया होगा।[6] ''सिपाही अपनी जान दांव पर लगाकर अपने आप को और रखवालों को यकीन दिला रहा था कि यीशु सचमुच मर चुका है।''[7]

यह तथ्य कि यीशु की हड्डियां नहीं तोड़ी गईं, पुराने नियम की एक भविष्यवाणी को पूरा करता है (यूहन्ना 19:36; भजन संहिता 34:20)।[8] वैसे ही यह तथ्य कि उसकी पसली बेधी गई थी (यूहन्ना 19:37; जकर्याह 12:10)।

मसीह की पसली खुलने से ''उस में से तुरन्त लोहू और पानी निकला'' (यूहन्ना 19:34ख)। क्योंकि शव में से लहू नहीं बहता, इसलिए टीकाकार इस घटना की डॉक्टरी व्याख्या ढूंढ़ने के लिए परिश्रम करते हैं। इसकी एक सबसे प्रसिद्ध व्याख्या यह है कि शरीर से इन तरल द्रव्यों का निकलना यह संकेत देता है कि यीशु की मृत्यु हृदय (फटने) टूटने से हुई (देखें भजन संहिता 69:20)।[9] डॉक्टरी व्याख्याओं की एक कमी यह है कि उनका आधार यह मान्यता है कि यीशु की मृत्यु के समय, उसके शरीर में से मृत्यु के कारण एक प्राकृतिक प्रक्रिया आरम्भ हुई। परन्तु पतरस और पौलुस ने ज़ोर दिया है कि मसीह का मांस ''सड़ा'' नहीं (प्रेरितों 2:31; देखें 13:37)।

बाइबल से बाहर के आरम्भिक मसीही लेखकों ने लहू और पानी में रहस्यमयी संकेत देखा। कइयों ने लहू और पानी में जो यीशु ''से'' निकला, प्रभु भोज और बपतिस्मे को देखा। कुछ ने यूहन्ना 19:34 को 1 यूहन्ना 5:6, 8 के जटिल पद से जोड़ा।[10] परन्तु यूहन्ना 19:34 में कोई संकेत नहीं है कि ऐसी अलंकारिक व्याख्या की मंशा थी।

शायद हमें लहू और पानी को हमारे पापों के लिए यीशु की मृत्यु के पूरे भेद के भाग के रूप में मानकर इस सब को छोड़ देना चाहिए। यूहन्ना, जिसने स्पष्ट तौर पर पहचाना था कि लहू और पानी मानवीय अनुभव के विपरीत निकले, ने इस घटना की सत्यता के बारे में अपनी व्यक्तिगत गवाही जोड़ी (यूहन्ना 19:35)।

यूहन्ना की स्पष्ट व्याख्या से यह दिखाने का उद्देश्य हल होता है कि यीशु *सचमुच मर गया* था–वह केवल बेहोश नहीं हुआ कि बाद में उसके चेले उसे होश में ले आते।[11] एक मेडिकल जरनल के एक लेख में इन शब्दों के साथ निष्कर्ष निकाला गया है:

> स्पष्टतया, ऐतिहासिक और डॉक्टरी प्रमाण से संकेत मिलता है कि यीशु की मृत्यु उसकी पसली में किए जाने वाले घाव से पहले हो गई थी। ... इसीलिए, यीशु की

मृत्यु क्रूस पर न होने की मान्यता पर आधारित व्याख्या आधुनिक डॉक्टरी से मेल नहीं खाती।[12]

साहसी अनुयायी

सिपाहियों ने यह सुनिश्चित कर लेने के बाद कि तीनों मर चुके हैं, उन्हें सीधे लट्ठों से नीचे उतार कर उनके शवों को ठिकाने लगाने की तैयारी कर ली। यदि यीशु की लाश का कोई दावेदार न होता तो उसके साथ ऐसा ही होना था। परन्तु किसी ने उसका दावा किया, परिवार के किसी व्यक्ति ने नहीं, उसके प्रेरितों में से किसी ने नहीं, बल्कि ''यहूदियों [यहूदी अगुओं] के डर से'' (यूहन्ना 19:38) एक गुप्त चेले ने। आश्चर्य की बात है कि वह उसी सभा का सदस्य था (मरकुस 15:43; लूका 23:50), जिसने मसीह को मृत्यु का दण्ड दिया था!

उसे ''अरिमतिया के यूसुफ'' के रूप में जाना जाता है (मरकुस 15:43; यूहन्ना 19:38; देखें मत्ती 27:57)। अरिमतिया यहूदिया का एक नगर था (लूका 23:51[13]), शायद यह सामरिया की सीमा के निकट एक गांव था।[14] मत्ती ने यूसुफ को ''एक धनी मनुष्य'' कहा है (मत्ती 27:57)। उसके द्वारा यशायाह 53:9 पूरा हुआ: ''उसकी कब्र भी दुष्टों [दो डाकुओं] के संग ठहराई गई और मृत्यु के समय वह धनवान [यूसुफ] का संगी हुआ।'' यूसुफ भला आदमी था, ''जो परमेश्वर के राज्य की बाट जोहने वाला था'' (लूका 23:50, 51; देखें मरकुस 15:43)। वह मसीहा की राह देख रहा था, जिसने अपना राज्य स्थापित करना था और उसने यीशु को मसीहा, ख्रिस्तुस के रूप में पहचान लिया था (मत्ती 27:57; यूहन्ना 19:38)।

अफ़सोस की बात है कि यूसुफ में यीशु में अपने विश्वास को बताने का साहस नहीं था। ''प्रतिष्ठित मंत्री'' होने के कारण (मरकुस 15:43), उसे डर था कि अपने विश्वास का अंगीकार करना उसे महंगा पड़ सकता है। इससे कुल मिलाकर उसे यहूदी समाज से निकाल दिया जाता (यूहन्ना 9:22[15])। लूका के अनुसार महासभा द्वारा यीशु के दोषी ठहराए जाने के समय, यूसुफ ''उनकी योजना और उनके इस काम से प्रसन्न न था'' (लूका 23:51)[16]–परन्तु ऐसा लगता है कि उसने प्रभु का बचाव भी नहीं किया था।

जब उसे लगा कि यीशु के शव को ''किसी गुमनाम और शापित खड्डे में फैंक दिया'' जाएगा[17] तो यूसुफ ''हियाव करके पिलातुस के पास गया'' (मरकुस 15:43ख)। सब कुछ जोखिम में डालकर, उसने विनती की कि ''मैं यीशु की लोथ को ले जाऊं'' (यूहन्ना 19:38ख)।

यहूदी उच्च न्यायालय के सदस्य की विनती से पिलातुस चकित हुआ होगा। वह यह जानकर भी हैरान हुआ था कि यीशु पहले ही मर गया था (मरकुस 15:44क)। जब सूबेदार ने उसे यकीन दिलाया कि यीशु सचमुच मर गया है तो पिलातुस ने ''शव यूसुफ को दिला दिया'' (मरकुस 15:44ख, 45; देखें मत्ती 27:58ख; यूहन्ना 19:38ग)।

यूसुफ को पिलातुस से अनुमति मिलने तक, सूर्यास्त (सब्त का आरम्भ) होने को था

(मत्ती 27:57क; मरकुस 15:42; लूका 23:54)। यूसुफ को जल्दी-जल्दी काम करना था। वह ''मलमल की एक चादर मोल'' ले आया (मरकुस 15:46), जबकि सभा का एक और सदस्य निकुदेमुस (देखें यूहन्ना 7:50) जो एक गुप्त चेला था, आवश्यक सुगंधियां ले आया (देखें यूहन्ना 19:39)। निकुदेमुस से हम यूहन्ना 3:1-21; 7:50-52 में मिले थे।[18] इस बात में कुछ विडम्बना है कि उन्होंने यीशु को प्रेम से दफ़नाया। ''आश्चर्य की बात है कि जो लोग चेला होने से नहीं डरते थे, वे अपने प्रभु की देह मांगने से डर गए थे, यद्यपि जो चेला होने से डरता था, वह लाश मांगने से नहीं डरा।''[19]

मसीह के हाथों और पांवों से क्रूर कील निकालते हुए, यूसुफ ने उसकी देह को क्रूस से उतारा[20] और उसे मलमल के कपड़े में लपेट दिया (मत्ती 27:59; मरकुस 15:46; लूका 23:53क), फिर वह ''उसका शव ले गया'' (यूहन्ना 19:38)।

गुलगुता के निकट ''एक बारी थी; और उस बारी में एक नई कब्र थी;[21] जिस में कभी कोई न रखा गया था''[22] (यूहन्ना 19:41)। यह यूसुफ की ''अपनी कब्र'' थी ''जो उसने चट्टान में खुदवाई थी''[23] (मत्ती 27:60)।[24] यूसुफ और यूहन्ना के पास अधिक समय नहीं था और ''कब्र निकट थी'' (यूहन्ना 19:42), जिस कारण उन्होंने यीशु को वहीं ले जाने का फैसला किया।[25] मसीह की देह उस स्थान पर ले जाए जाने के समय, क्रूस के पास से दो स्त्रियां भी उनके पीछे थीं (लूका 23:55; मत्ती 27:61)।

सभा के सदस्यों ने यीशु की लाश कब्र में रखी (मत्ती 27:60; मरकुस 15:46; लूका 23:53; यूहन्ना 19:42) और दफ़नाने की विधिवत तैयारी कर दी। दफ़नाने का काम उन्होंने ''यहूदियों के गाड़ने की रीति के अनुसार'' किया (यूहन्ना 19:40ख); उन्होंने उसके शरीर के अन्दर का कोई अंग नहीं निकाला, जैसा कि कुछ समाजों में किया जाता था (जैसे मिस्रियों में)।

यहूदी रीति के अनुसार, उन्होंने पहले सूख चुके लहू, थूक, धूल और चिपटियों को उतारते हुए शव को धोना था। फिर लाश को ''सुगन्ध द्रव्य के साथ कफ़न में लपेटा'' (यूहन्ना 19:40ख)। कपड़े की पट्टियां[26] मुंह को छोड़कर पूरे शरीर पर लपेटी जाती थीं (देखें यूहन्ना 11:44)। फिर मसालों की एक तह कपड़े में लगाई जाती थी। इसके बाद कपड़े की तह, मसालों की तह और इस प्रकार कई तहें लगाई जाती थीं। निकुदेमुस इसके लिए मीठी सुगन्ध देने वाला गंधरस और सुगन्धित एलवा का पाउडर सत्तर से पचहत्तर पौंड (पचास सेर के लगभग) ले आया था (यूहन्ना 19:39)।[27]

यीशु की लाश को दफ़नाने के लिए जल्दी में काम करते हुए, दोनों ने अपने आप को औपचारिक रूप से अशुद्ध कर लिया (गिनती 19:11)। इससे वे अखमीरी रोटी के पर्व के शेष भाग में शामिल होने के अयोग्य हो गए, परन्तु स्पष्टतया उन्हें इस बात की चिंता नहीं थी।

जब यूसुफ और निकुदेमुस ने थोड़े से समय में, जो कुछ वे कर सकते थे, कर लिया, तो उन्होंने यीशु के मुंह पर अंगोछा लपेट दिया (देखें यूहन्ना 20:7; 11:44)। फर, अंधेरा बढ़ने पर, यूसुफ ने ''कब्र के द्वार पर एक बड़ा पत्थर लुढ़काकर'' जो ''बहुत ही बड़ा

था''[28] (मत्ती 27:60ख; मरकुस 16:4) कब्र को बंद कर दिया।[29]

असंतुष्ट स्त्रियां

इन लोगों के श्रोता भी थे, जिनसे वे शायद अनजान थे। ''कब्र के सामने बैठी'' शायद पास की किसी पहाड़ी पर, दो स्त्रियां मरियम मगदलीनी और याकूब और यूसुफ की माता मरियम गुलगुता से उनके पीछे थीं (मत्ती 27:61; देखें मरकुस 15:40, 47)।[30] इन स्त्रियों ने यूसुफ और निकुदेमुस को जल्दी करते हुए देखा था (लूका 23:55), परन्तु उन्हें उनसे संतुष्टि नहीं हुई थी। उन्होंने बाग से यरूशलेम में जहां वे ठहरी हुई थीं, जाकर ''सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार किया'' (लूका 23:56क)। वे प्रभु की देह को अभिषेक करने का काम सब्त के बाद कब्र में जाकर पूरा करना चाहती थीं (लूका 23:56ख; मरकुस 16:1)।

शनिवार: निराशा का समय
(मत्ती 27:62-66; लूका 23:56ख; यूहन्ना 20:19क)

निष्क्रिय मित्र

सब्त के दिन स्त्रियों ने ''आज्ञा के अनुसार विश्राम किया'' (लूका 23:56ख)। कुल मिलाकर मसीह के अनुयायियों के लिए यह ''यहूदियों के डर के मारे'' (यूहन्ना 20:19) बन्द दरवाज़ों के पीछे ''शोक में डूबे हुए और रोते हुए'' (मरकुस 16:10) निराशा में बिताया गया दिन था। उनकी आशाएं ''यूसुफ की कब्र में यीशु की लाश के साथ दफ़न हो गई'' थीं। ''उन्हें दोहरा शोक था। उन्हें अपने अतिप्रिय मित्र के दुखद ठुकराए जाने तथा मृत्यु का दुख था जिससे वे दिल से प्रेम करते थे। परन्तु इससे भी बढ़कर वे इस बात से घबराए हुए थे कि उनके विश्वास को ग्रहण लग गया था।''[31] जैसा कि मसीह ने पहले ही बताया था, वे उन भेड़ों के समान थे, जिनका चरवाहा न हो (मत्ती 26:31; मरकुस 14:27)।

सक्रिय शत्रु

यीशु के चेलों ने निष्क्रिय रहकर सब्त का दिन बिताया हो सकता है, पर उसके शत्रुओं ने नहीं। ''दूसरे दिन जो तैयारी के दिन के बाद का दिन था, महायाजकों और फरीसियों ने पिलातुस के पास इकट्ठे होकर कहा'' (मत्ती 27:62)।[32] यह सभा सम्भवतया सूर्यास्त के तुरन्त बाद, सब्त के आरम्भ में हुई। ऐसा लगता नहीं है कि सभा के सदस्यों ने यीशु की कब्र को एक रात के लिए भी बिना पहरे के रहने दिया हो।

यहूदी अगुओं ने पिलातुस को बताया, ''हे महाराज, हमें स्मरण है कि उस भरमाने वाले ने अपने जीते जी कहा था, कि मैं तीन दिन के बाद जी उठूंगा'' (मत्ती 27:63)। उनकी बात अद्‌भुत है। यीशु ने अपने चेलों को *स्पष्ट* बता दिया था कि वह मुर्दों में से जी

उठेगा (मत्ती 16:21; 17:22, 23; लूका 18:31-33), परन्तु वे नहीं समझे थे (मरकुस 9:9, 10)। दूसरी ओर साधारण लोगों (अपने शत्रुओं सहित) से अपने पुनरुत्थान की बात उसने *गुप्त* शब्दों में की थी (मत्ती 12:39, 40; 16:4; यूहन्ना 2:19-21; 10:17, 18) परन्तु यहूदी अगुओं ने उसके संदेश को समझ लिया था![33] यद्यपि वे यीशु की बातों में विश्वास नहीं करते थे, पर कम से कम वे इतना अवश्य समझते थे कि उसने बताया था कि वह ''तीन दिनों के बाद फिर जी उठे'' गा।

इसलिए उन्होंने राज्यपाल से यह विनती की: ''अत: आज्ञा दे कि तीसरे दिन तक कब्र की रखवाली की जाए,[34] ऐसा न हो कि उसके चेले आकर उसे चुरा ले जाएं और लोगों से कहें, 'वह मरे हुओं में से जी उठा है।' तब पिछला धोखा पहले से भी बुरा होगा'' (मत्ती 27:64)। क्योंकि सभा के सदस्यों ने आवश्यकता पड़ने पर छल का इस्तेमाल करने में हिचकिचाहट नहीं की थी (मत्ती 26:59)। उन्होंने यह समझ लिया कि यीशु के चेले भी अवसर मिलने पर ऐसा ही कर सकते हैं। (हम में से अधिकतर लोगों को लगता है कि जो हम सोचते या महसूस करते हैं, वैसा ही दूसरे भी करते हैं।)

पिलातुस ने उत्तर दिया, ''तुम्हारे पास पहरुए तो हैं'' (मत्ती 27:65क)। कुछ लोगों का सुझाव है कि राज्यपाल कह रहा था, ''तुम्हारे पास पहले ही मन्दिर के पहरेदार हैं; उन्हें इस्तेमाल करो।'' परन्तु अगली घटना से संकेत मिलता है कि पिलातुस उनकी सहायता करने और उन्हें *रोमी* पहरेदार उपलब्ध करवाने के लिए सहमत हो गया।[35] ऐसा करके उसने उन्हें बताया, ''जाओ, अपनी समझ के अनुसार [कब्र की] रखवाली करो'' (मत्ती 27:65ख)।

याजक ''पहरुओं को साथ लेकर गए और ... कब्र की रखवाली की'' (मत्ती 27:66)। यानी पूरी कोशिश से। पहले तो उन्होंने यह यकीनी बनाया कि यीशु की लाश कब्र में ही है।[36] फिर उन्होंने पत्थर को पीछे हटाकर उस पर ''मुहर लगा दी'' (मत्ती 27:66ख)। ऐसा पत्थर के किनारों पर मोम या मिट्टी की मुहर लगाकर या पत्थर के इर्द-गिर्द एक रस्सी खींचकर उसे चट्टान के दूसरी ओर बांध कर किया गया हो सकता है। मुहर लगाने का उद्देश्य किसी प्रकार की छेड़छाड़ को रोकना था; क्योंकि आज्ञा का उल्लंघन मृत्यु दण्ड होना था।[37] अन्त में रोमी पहरेदार कब्र के आस-पास पहरा देने लगे (मत्ती 27:66ग)।[38] इस बात से संतुष्ट कि तीन दिनों में वे यीशु की लाश को दिखा सकेंगे, जो उनके अनुसार ''परेशान करने वाला, परन्तु थोड़ी देर की मसीह की लहर'' पर अन्तिम प्रहार होना था।

रविवार का पहला भाग: अविश्वास का समय (मत्ती 28:1-8; मरकुस 16:1-9; लूका 24:1-11)

सब्त का अन्त एक सिसकी के साथ हुआ था; सप्ताह का पहला दिन एक गीत के साथ आरम्भ हुआ। परन्तु चेलों को निराशा से आनन्द में बदलने के लिए समय लगा। जैसा हम देखेंगे कि यीशु के अनुयायियों के लिए इस बात को मानना कठिन था कि वह सचमुच मुर्दों में से जी उठा था।

आश्चर्यकर्म

''सुसमाचार के किसी भी लेखक ने पुनरुत्थान का वर्णन नहीं किया है, जो सब आश्चर्यकर्मों से बड़ा है। ... उस अति पवित्र दृश्य पर परदा डाल दिया जाता है।''[39] हम केवल इतना ही पढ़ते हैं कि ''सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही'' यीशु जी उठा (मरकुस 16:9)।[40] इससे यह अर्थ निकाला जाता है कि पुनरुत्थान सूर्य चढ़ने से पहले हुआ (यूहन्ना 20:1)। यानी यीशु पहले दिन (सूर्यास्त के समय) के आरम्भ और अगली सुबह सूर्योदय के बीच कहीं जी उठा।[41]

मृत्यु के समय यीशु की आत्मा अधोलोक में चली गई (लूका 23:43;[42] प्रेरितों 2:27, 31) और उसकी देह कब्र में रखी गई थी। रात में किसी समय उसकी देह परिवर्तित हो गई,[43] और उसकी आत्मा लौट आई। ''यह कि आत्मा ने शुक्रवार 3 बजे सायं पिता के सुपुर्द होकर ... , उसकी मृत देह में फिर से प्रवेश हुई जिससे वह जीवित हुआ।''[44] वह कब्र की पट्टियों को फैंककर[45] ''फिर कभी न मरने के लिए'' (रोमियों 6:9) ''मरे हुओं में से जी उठा'' (प्रेरितों 10:41)।[46] पीटर मार्शल ने इस अकथनीय बात के विवरण के लिए काव्य रूपक का इस्तेमाल किया है:

> ... अचानक सूर्यास्त और भोर के बीच कहीं,
> अरिमतिया के यूसुफ की उस नई कब्र में,
> अदृश्य शक्तियों का मंडराना हुआ ...
> परमेश्वर के श्वास के बाग में चलने जैसी कोई सरसराहट।
> उस मृत देह में जिसे उन्होंने शीत पत्थर की पट्टी पर रखा था
> दृढ़ अमापनीय जीवन वापस आ गया था;
> और वह मुर्दा जी उठा था
> कब्र के कपड़ों से बाहर आ गया था।
> कब्र की दहलीज़ पर चल कर गया था,
> अपने घायल पैरों पर एक पल के लिए डगमगाकर खड़ा हुआ था,
> और ओस से भरे बाग में से सदा-सदा के लिए जी उठकर निकला था।[47]

दूत

पुनरुत्थान के कुछ समय बाद, जबकि अभी अंधेरा ही था (मत्ती 28:1; यूहन्ना 20:1), ''एक बड़ा भुईंडोल हुआ, क्योंकि प्रभु का एक दूत स्वर्ग से उतरा और पास आकर [कब्र के] पत्थर को लुढ़का दिया और उस पर बैठ गया'' (मत्ती 28:2)। उसने पत्थर को यीशु को कब्र से निकालने के लिए नहीं, बल्कि दूसरों को यह दिखाने के लिए लुढ़काया कि कब्र खाली है,[48] क्योंकि वह तो पहले ही जा चुका था। स्वर्गदूत शायद यह सुनिश्चित करने के लिए पत्थर पर बैठा था कि कोई कब्र को फिर से बन्द न कर दे।

स्वर्गदूत का दर्शन ''बिजली का सा और उसका वस्त्र पाले की नाईं उज्ज्वल था'' (मत्ती 28:3)। पहरेदार उसे देखकर ''भय से ... कांप उठे, और मृतक समान हो गए''

(मत्ती 28:4)। वे भय से सुन्न हो गए थे। होश में आने पर, वे अपने आप को उस स्वर्गीय आगंतुक से दूर करके बाग से भाग निकले होंगे। आखिर, खाली कब्र की रखवाली करने का औचित्य ही क्या था![49]

संदेश

खाली कब्र आगंतुकों के लिए तैयार थी। हम यह नहीं बता सकते कि घटनाएं किस क्रम में एक के बाद एक हुईं; इस और अगले पाठ में सामग्री को संगठित करने के ढंग का प्रबन्ध किया गया है। संक्षिप्त शृंखला का महत्व नहीं है। महत्व इस बात का है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा था और उसने यह बात सैकड़ों लोगों को दर्शन देकर साबित कर दी थी।

''सब्त के दिन के बाद,[50] सप्ताह के पहले दिन पौ फटते ही'' मरियम मगदलीनी और यूसुफ और याकूब की माता मरियम, जो यूसुफ और निकुदेमुस को यीशु को दफ़नाते हुए देख रही थीं, कब्र की ओर बढ़ीं (मत्ती 28:1)। उनके साथ सलोमी और योअन्ना[51] और अन्य महिलाएं भी होंगी। वे यीशु की देह का अभिषेक करने के लिए सुगन्धित वस्तुएं लेकर आई थीं (मरकुस 16:1; लूका 24:10)।[52]

बाग के पास जाकर, वे हैरान थीं, ''हमारे लिए कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?'' (मरकुस 16:3)। वे व्यर्थ में चिंता कर रही थीं। वहां पहुंचकर उन्होंने ''पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया'' (लूका 24:2)। कब्र के भीतर जाकर यीशु की देह को वहां न देखकर वे परेशान हो गईं कि यह कहां जा सकती है (लूका 24:3, 4)।[53]

फिर अचानक, ''दो पुरुष झलकते वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए'' (लूका 24:4)।[54] उन्हें देखकर ये स्त्रियां ''डर गईं और धरती की ओर मुंह झुकाए रहीं'' (लूका 24:5क)। उन ''पुरुषों'' में से एक पत्थर हटाने वाला स्वर्गदूत था (मत्ती 28:2, 5)। उसने उनसे कहा:

> तुम मत डरो: मैं जानता हूं कि तुम यीशु को जो क्रूस पर चढ़ाया गया था, ढूंढ़ती हो (मत्ती 28:5)।
>
> तुम जीवते को मरे हुओं में क्यों ढूंढ़ते हो? (लूका 24:5ख)
>
> वह यहां नहीं है, परन्तु अपने वचन के अनुसार जी उठा है[55] (मत्ती 28:6क)।
>
> ... स्मरण करो; कि उस ने गलील में रहते हुए तुम से कहा था कि अवश्य है, कि मनुष्य का पुत्र पापियों के हाथ में पकड़वाया जाए, और क्रूस पर चढ़ाया जाए; और तीसरे दिन जी उठे (लूका 24:6, 7)।
>
> आओ, यह स्थान देखो, जहां प्रभु पड़ा था, और शीघ्र जाकर उसके चेलों से कहो, कि वह मृतकों में से जी उठा है; और देखो वह तुम से पहिले गलील को जाता है,

वहां उसका दर्शन पाओगे,[56] देखो, मैं ने तुम से कह दिया (मत्ती 28:6ख, 7; देखें मरकुस 16:7)।

तब उन स्त्रियों को यीशु की प्रतिज्ञा याद आई (लूका 24:8) और ''वे भय और बड़े आनन्द के साथ कब्र से शीघ्र लौटकर उसके चेलों को समाचार देने के लिए दौड़ गईं''[57] (मत्ती 28:8)। रास्ते में, ''उन्होंने किसी से कुछ न कहा'' (मरकुस 16:8),[58] परन्तु जहां प्रेरित ठहरे हुए थे, वहां पहुंचकर, ''उन्होंने उन ग्यारहों[59] को, और, और सब को, ये सब बातें कह सुनाईं'' (लूका 24:9; देखें आयतें 22, 23)।

स्वर्गीय दूतों और आशा का संदेश बताते हुए उन स्त्रियों के स्वरों की उत्तेजना की कल्पना करना कठिन नहीं है। अफ़सोस कि प्रेरितों को उनकी बातें ''कहानी सी समझ पड़ीं, और उन्होंने उन की प्रतीति न की'' (लूका 24:10, 11)।[60] उन्हें विश्वास करने के लिए और प्रमाण चाहिए था जो शीघ्र ही मिल जाने वाला था।

सारांश

प्रेरितों ने स्त्रियों की बात पर ''विश्वास नहीं किया।'' यीशु की मृत्यु के समय *किसी ने* विश्वास नहीं किया था कि वह मुर्दों में से जी उठा है, जिन्होंने उसे गाड़ा उन्हें भी विश्वास नहीं था। बन्द दरवाज़ों के पीछे उसके चेलों को विश्वास नहीं था। उसके शव पर सुगंधित वस्तुएं लगाने के लिए आई स्त्रियों को विश्वास नहीं था। निश्चय ही उसके शत्रुओं को विश्वास नहीं था। एच. आई. हेस्टर ने लिखा है, ''जी उठे प्रभु का पहला बड़ा काम अपने ही चेलों को विश्वास दिलाना था कि वह फिर जी उठा है।''[61] इस पाठ के दूसरे भाग में, हम देखेंगे कि उसने इस काम को कैसे पूरा किया।

टिप्पणियां

[1]यह दो भाग वाले पाठ का पहला भाग है। यदि समय की कमी हो, तो इस और अगले पाठ को संक्षिप्त करके एक ही पाठ बनाया जा सकता है। [2]इस पुस्तक में ''रोमी क्रूस पर छह घण्टे'' और ''क्रूस के पास स्त्रियां'' पाठों में चर्चा देखें। [3]कई लेखकों का भी मत है कि यहूदियों की व्यवस्था से बाहर की परम्परा थी कि सब्त के दिन क्रूस पर शवों को रहने देने से सब्त दूषित हो जाएगा। [4]जैसा कि कहीं और कहा गया है, एक दिन के फसह के पर्व के तुरन्त बाद सात दिन चलने वाला अखमीरी रोटी का पर्व होता था। नये नियम के समय तक दोनों पर्व आपस में मिल गए थे और उन्हें फसह और अखमीरी रोटी के पर्व के रूप में जाना जाता था। ''बड़ा दिन'' वाक्यांश पर और चर्चा के लिए, इस पुस्तक में आगे ''यीशु किस दिन मरा था?'' पाठ देखें। [5]''एक रोमी क्रूस पर छह घण्टे'' पाठ में क्रूसारोहण की व्याख्या पर विचार करें। [6]इससे ''खतरनाक घाव'' हो जाता ''[जिसकी] अधिकतर रोमी सिपाहियों को शिक्षा दी जाती होगी'' (विलियम डी. एडवर्ड्स, वैसली जे. गेबल, एण्ड फ्लायड ई. होस्मर, ''ऑन द फिज़िकल डैथ ऑफ़ जीज़स क्राइस्ट,'' *जरनल ऑफ़ द अमेरिकन मैडिकल एसोसिएशन* [21 मार्च 1986]): 1460. [7]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 1286. [8]यह तथ्य कि यीशु की हड्डियां

नहीं तोड़ी गई थीं फसह के मेमने के रूपक को पूरा करने के लिए भी आवश्यक था।[9]यह द *फिज़िकल कॉज़ ऑफ़ द डैथ ऑफ़ क्राइस्ट* (फोस्टर, 1285-86 में उद्धृत) में विलियम स्ट्राउड का निष्कर्ष था। एडवर्ड्स, गेबल, एण्ड होस्मर, 1463 में कई चिकित्सकीय सम्भावनाएं दी गई हैं।[10]1 यूहन्ना 5:6, 8 की कई व्याख्याएं हो सकती हैं। *सम्भवतया,* उन आयतों में पानी यीशु के बपतिस्मे को कहा गया है, जबकि लहू उसकी मृत्यु को (जे. डब्ल्यू. रॉबर्ट्स, *द लैटर्स ऑफ़ जॉन,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, सं. एवरट फर्ग्यूसन [ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1968], 129-33)।

[11]यह विचार कि यीशु बेहोश हो गया था, पुनरुत्थान का इनकार करने वाले कुछ लोगों द्वारा गढ़ी गई शिक्षा है। इसे आम तौर पर ''स्वून थ्योरी'' कहा जाता है।[12]एडवर्ड्स, गेबल एण्ड होस्मर, 1463. [13]''यहूदियों के नगर'' वाक्यांश का अर्थ आम तौर पर ''यहूदिया में'' निकाला जाता है। NIV बाइबल में ''यहूदी नगर'' है।[14]''यीशु के समय में पलिश्तीन'' मानचित्र देखें। इस स्थान की चर्चा एल्फ्रेड एडरशेम, *द लाइफ़ एण्ड टाइम्स ऑफ़ जीज़स द मसायाह,* न्यू अपडेटड वर्ज़न (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1993), 898 में की गई है।[15]''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 98 पर ''मैं अन्धा था और अब देखता हूं'' पाठ में यूहन्ना 9:22 पर टिप्पणियां देखें।[16]क्या इसका अर्थ यह है कि यूसुफ यीशु की मृत्यु के समय सभा के मत डालने के समय वहां नहीं था? वह जान-बूझकर दूर रहा हो सकता है, उसे ड्यूटी के कारण कहीं और जाना पड़ गया होगा या उसे सभा की जानकारी नहीं दी गई होगी। ऐसा नहीं हो सकता था कि वह वहां उपस्थित होकर मत न दे। हमें बताया नहीं गया है, यह स्पष्ट लगता है कि अभी तक यूसुफ ने यीशु की ओर से बात नहीं की थी।[17]जेम्स स्टाल्कर, *द ट्रायल एण्ड डैथ ऑफ जीज़स क्राइस्ट* (न्यू यॉर्क: ए. सी. आर्मस्ट्रॉन्ग एण्ड सन, 1909), 310-11. [18]यूहन्ना 3:1-21 पर टिप्पणियों के लिए ''मसीह का जीवन, भाग 1'' में पृष्ठ 143 पर ''सब बातों का पहली बार'' पाठ देखें। यूहन्ना 7:50-52 पर संक्षिप्त टिप्पणियों के लिए, ''मसीह का जीवन, भाग 4'' में पृष्ठ 51 पर ''यरूशलेम में जाना'' पाठ देखें।[19]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 734. [20]पता नहीं कील निकालने से पहले क्रूस का लट्ठा नीचे किया गया या यीशु के क्रूस पर रहते ही कील निकाले गए। जो भी हो, क्योंकि यूसुफ़ एक धनी व्यक्ति था, उसके साथ इस काम और उसके अगले प्रयासों में उसकी सहायता के लिए सेवक होंगे।

[21]बाग और कब्र का स्थान वहीं से पता चल सकता है, जहां गुलगुता था। ''मसीह का जीवन, भाग 6'' में ''विजय या त्रासदी'' पाठ में इस पर संक्षिप्त चर्चा देखें। कब्र के स्थान के ऐतिहासिक और पुरातत्वीय प्रमाण पर विस्तृत चर्चा जॉन मैक्रे, *आर्कियोलॉजी एण्ड द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1991), 206-17. [22]सुझाव दिया गया है कि इस बात पर कि ''उस कब्र में अभी तक कोई नहीं रखा गया था'' *जो* जी उठा था उसके बारे में किसी भी प्रकार के संदेह को मिटाने के लिए ज़ोर दिया गया।[23]यह पास ही की किसी पहाड़ी को खोदकर बनाई गई होगी। यह तथ्य कि कब्र ''चट्टान में खुदवाई थी'' इस बात का संकेत देता है कि इसका केवल *एक ही* द्वार था।[24]कुछ लोग सवाल उठाते हैं कि यूसुफ ने ''अरिमतिया में अपने घर से इतनी दूर'' कब्र क्यों बनाई, परन्तु इन विचारों पर ध्यान दें: (1) यह तथ्य कि यूसुफ को ''अरिमतिया के रहने वाले'' के रूप में पहचाना गया, का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि वह अभी भी वहीं रहता था। (यीशु को ''नासरी'' ही कहा जाता था जब कि वह अब नासरत में बिल्कुल नहीं रहता था।) (2) यरूशलेम में गाड़े जाने के साथ कोई प्रतिष्ठा जुड़ी हो सकती है।[25]यूहन्ना 19:42 और 20:13 में, यह संकेत मिल सकता है कि यह कब्र गाड़े जाने के *अस्थाई* स्थान के रूप में बनाई हो सकती है और यूसुफ ने सब्त के बाद यीशु को और अच्छी जगह ले जाने की योजना बनाई होगी। मसीह के जी उठने से यूसुफ की योजनाएं धरी की धरी रह गईं।[26]यूहन्ना 19:40 और 20:5 में ''कफ़न'' की बात की गई है। यूसुफ द्वारा खरीदा गया मलमल का कपड़ा (मरकुस 15:46) इसीलिए फाड़ा गया होगा या हो सकता है कि उसकी पट्टियां किसी और ने बनाई हों और वह मलमल का कपड़ा अभिषेक किए जाने के बाद लाश पर कफ़न बनाकर रख दिया गया हो।[27]NASB बाइबल में ''सौ पौंड के लगभग'' है, परन्तु यूनानी शास्त्र में एक सौ लिटरा (*litras*) है। अधिकतर अधिकारियों का मानना है कि एक *लिटरा* लगभग बारह औंस (1 औंस=

28.25 ग्राम) होता है। यदि ऐसा है तो सौ लिटरा लगभग 31.75 किलोग्राम के लगभग होंगे [हिन्दी में पचास सेर के लगभग यानी चालीस किलो के लगभग है-अनुवादक]। NIV में ''लगभग पचहत्तर पौंड'' है। मसालों की यह मात्रा महंगी होगी, जो इस बात का संकेत है कि यूसुफ की तरह निकुदेमुस भी धनी व्यक्ति था। मुर्र यीशु के जन्म के समय दण्डवत करने आए पण्डितों में से एक द्वारा लाया गया उपहार था। इसका इस्तेमाल क्रूस पर चढ़ने वाले व्यक्ति को सिरके के साथ नशे के रूप में देने के लिए भी किया जाता था। एलवा भारी पत्तों वाला फूलों का एक पौधा है। जहां मैं रहता हूं, वहां इस के पत्ते का रस खुजली से आराम देने या जले पर मरहम लगाने के रूप में किया जाता है। नये नियम के समय में इस पौधे को सुखाकर उसका पाउडर बनाया जाता था। मुर्र और एलवा के मोहक सुगन्ध देने के लिए इस्तेमाल के उदाहरण के लिए, देखें भजन संहिता 45:8. [28]ये पत्थर विशाल, चौरस और गोल थे (बिना बीच में छेद किए बड़े चक्की के पाट जैसे), जिन्हें चट्टान में की गई खुदाई पर लुढ़काकर लगाने के लिए बनाया गया था। खुदाई की ढलान आम तौर पर इस प्रकार से बनाई जाती थी, जिससे पत्थर को लुढ़काकर कब्र पर लगाना तो आसान हो, पर उसे वहां से हटाना कठिन (देखें मरकुस 16:3)। यदि यूसुफ को पत्थर को लुढ़काने में सहायता की आवश्यकता थी, तो निकुदेमुस उसकी सहायता के लिए वहां था। हो सकता है कि वहां कुछ सेवक भी हों। [29]यीशु के जी उठने के बाद यूसुफ और निकुदेमुस का क्या हुआ? हमें उम्मीद होगी कि मसीह को दफ़नाकर अपना सब कुछ दांव पर लगाने वाले ये लोग मसीही बन गए होंगे, विश्वास के ज़बर्दस्त पहरेदार होंगे, परन्तु नया नियम ऐसा कुछ नहीं बताता। इन दोनों के बारे में लोगों ने बाद में कई लुभावनी दंतकथाएं बना लीं, पर कहानियां तो कहानियां ही होती हैं। [30]सलोमी (याकूब और यूहन्ना की माता) क्रूस के पास इन दोनों स्त्रियों के साथ थी (मरकुस 15:40), परन्तु वह उनके साथ कब्र तक नहीं गई। शायद वह यीशु की माता को सांत्वना देने के लिए अपने पुत्र के कमरे में गई हुई थी।

[31]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 223. [32]हम उसके बारे में जो कुछ भी कहें, पिलातुस अपनी प्रजा के लिए हर समय उपलब्ध रहता था: पहले वह सुबह भोर के समय ही यहूदी अगुओं से मिला था (मरकुस 15:1), दिन भर उनके साथ लोग थे (19:21, 31; देखें मरकुस 15:43) और अब अंधेरा हो जाने के बाद वह उनसे मिला। [33]यहूदी अगुओं द्वारा कही गई ''तीन दिन'' की बात ''योना के चिह्न'' के सम्बन्ध में यीशु की ही बात (मरकुस 12:39, 40) और मन्दिर के विनाश की गुप्त बात (यूहन्ना 2:19)। यहूदी अगुवे यीशु की शिक्षा को और भी कई तरह से सीख सकते थे। उदाहरण के लिए, उनमें से कइयों ने यीशु को अपने चेलों से बातें करते सुना था या यहूदा ने उन्हें बताया हो सकता है। [34]ध्यान दें कि अगुओं ने ''तीन दिनों के बाद'' का अर्थ ''तीसरे दिन तक'' समझा था। यदि उन्होंने यह सोचा था कि यीशु पूरे तीन दिन कब्र में रहेगा, तो उन्होंने यह कहा होता ''चौथे दिन तक।'' इस पर अधिक चर्चा के लिए इस पुस्तक में आगे ''यीशु किस दिन मरा था?'' पाठ देखें। [35]पुनरुत्थान के बाद, जब प्रधान याजकों ने झूठ बोलने के लिए पहरेदारों को घूस दी (मत्ती 28:11-13), तो उन्होंने उन्हें बताया कि यदि बात ''हाकिम के कान तक'' पहुंची तो वे उन्हें ''जोखिम से बचा लेंगे'' (मत्ती 28:14)। परिस्थितियों के हिसाब से रोमी सिपाहियों को हाकिम के सामने मुश्किल आई होगी, पर पहरुओं को नहीं (फोस्टर, 1310)। [36]यदि उन्हें इस बात का पक्का यकीन नहीं था, तो पूरे कार्य में इसका कोई संकेत नहीं था। [37]रिचर्ड रोजर्स, *द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट एण्ड हिज़ टीचिंग्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसेट इंटरनैशनल बाइबल इंस्टीट्यूट एक्सटरनल स्टडीज़ डिपार्टमेंट, 1995), 101. [38]यह नहीं बताया गया है कि इस काम को करने के लिए कितने सिपाहियों को लगाया गया था। हम यह जानते हैं कि वहां केवल एक सिपाही नहीं था (मत्ती 28:4) हम यह भी जानते हैं कि सिपाही दो से अधिक लोग थे (मत्ती 28:11)। क्रूस पर चढ़ाने के कार्य के लिए चार लोगों को लगाया गया था (यूहन्ना 19:23)। शायद इतने ही लोगों को इस काम के लिए लगाया गया। यह भी हो सकता है कि क्योंकि यह निगरानी कई दिन तक रहनी थी, इसलिए चार-चार सिपाहियों के चार समूहों को बारी-बारी यह ज़िम्मेदारी दी जाती हो-जैसा पतरस की रखवाली के समय हुआ था (12:4)। [39]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 342. [40]मरकुस 16:9 मरकुस की पुस्तक के समापन का विवादित भाग है, जिस पर इस भाग में आगे चर्चा की

जाएगी। परन्तु अधिक लोग इस पर सहमत होंगे कि मरकुस 16:9 प्रारम्भिक कलीसिया की समझ तथा विश्वास को ही दर्शाता है। यह तथ्य कि यीशु सप्ताह के पहले दिन जी उठा, मसीही विश्वास का केन्द्र है। पुरानी वाचा के अधीन, सातवां दिन अर्थात सब्त ''विशेष'' दिन था (निर्गमन 20:8-11)। नई वाचा में, ''विशेष'' दिन सप्ताह का पहला दिन, अर्थात ''प्रभु का दिन'' है (प्रकाशितवाक्य 1:10)। इस दिन, आरम्भिक कलीसिया आराधना के लिए इकट्ठी होती थी (1 कुरिन्थियों 16:1, 2; प्रेरितों 20:7)।

[41]कई लेखकों का मानना है कि मत्ती 28:1-8 की शृंखला इस बात का संकेत देती है कि जब स्त्रियां कब्र की ओर आ ही रही थीं तो स्वर्गदूत ने उस पत्थर को लुढ़का दिया और यीशु कब्र के खुलने से थोड़ी देर पहले ही जी उठा था। यदि यह निष्कर्ष सही है, तो जी उठना पहले दिन की भोर से थोड़ा पहले हुआ था। [42]''रोमी क्रूस पर छह घण्टे'' पाठ में लूका 23:43 पर टिप्पणियां देखें। [43]मसीह के वापस आने पर जीवित लोगों की देहें शारीरिक देहों से आत्मिक देहों में बदल जाएंगी (1 कुरिन्थियों 15:50-53; देखें आयतें 42-44)। यीशु की देह के साथ ऐसा ही कुछ हुआ होगा (क्योंकि अब यह बन्द दरवाज़ों में से भी निकल सकती थी; यूहन्ना 20:19)। इस पुस्तक में आगे ''यीशु की जी उठी देह'' पाठ देखें। [44]रॉबर्ट डंकन कल्वर, द *लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 267. [45]क्योंकि यीशु की देह का कफ़न उतारने के लिए कोई वहां नहीं था (देखें यूहन्ना 11:44), इसलिए हम यह मान सकते हैं कि बाद में बंद दरवाज़ों में से जाने की तरह यीशु पट्टियों में से निकल गया होगा (यूहन्ना 20:19, 26)। उसके जी उठने के बारे में बहुत कुछ है, जो हमें नहीं मालूम! हमारे प्रश्नों के उत्तर हमारी जिज्ञासा को शांत कर सकते हैं, परन्तु उनसे हमारे विश्वास में बढ़ोतरी नहीं होगी-सो परमेश्वर ने ऐसे उत्तर हमें नहीं दिए हैं। [46]जी उठने के अधिकतर हवालों में यह ज़ोर देते हुए कि ''*परमेश्वर ने* उसे जिलाया'' (प्रेरितों 2:24), यह कहा गया है कि यीशु ''जी उठा'' (यूहन्ना 2:22; 21:14; रोमियों 4:25; 6:4; 8:34; 1 कुरिन्थियों 15:4)। परन्तु, *यीशु* के भी कहने का अर्थ था कि वह अपने जी उठने में निष्क्रिय नहीं, बल्कि सक्रिय होगा (यूहन्ना 10:17, 18)। पौलुस के कहने का यह अर्थ लगता है कि जी उठने में *पवित्र आत्मा* की उपस्थिति भी एक कारक थी (रोमियों 8:11; 1:4)। इन वाक्यों में कोई विरोधाभास नहीं है, क्योंकि जो परमेश्वरत्व का एक सदस्य करता है, वही सभी करते बताया गया है। [47]पीटर मार्शल, द *फ़र्स्ट ईस्टर,* सं. कैथरीन मार्शल (न्यू यॉर्क: मैक्ग्रा-हिल कं., 1959), 128-29. [48]अभी तक यीशु को कब्र में से बाहर आते हुए दिखाया गया था, परन्तु इसका अर्थ यह होगा कि उसका पहला दर्शन अविश्वासी पहरेदारों को था। सुसमाचार के वृत्तांतों के अनुसार, सबसे पहले वह मरियम मगदलीनी को दिखाई दिया (मरकुस 16:9; देखें यूहन्ना 20:1-18)। [49]कुछ पहरेदारों ने जाकर जो किया उसे मत्ती 28:11-15 में लिखा गया है। इन आयतों का हम बाद में अध्ययन करेंगे। [50]पुराने अनुवादों में ''सब्त के अन्त में'' (देखें KJV) है, जिससे कुछ समन्वयों में दो मरियमों द्वारा अभी भी बंद कब्र में जाने के लिए एक और सब्त मिलाया गया। आज, अधिकतर अनुवादक मानते हैं कि ''सब्त के दिन के बाद'' अधिक सही अनुवाद है।

[51]योअन्ना गलील में यीशु की सेवा करने वाली स्त्रियों में से थी (लूका 8:3)। [52]जैसा कि हम इस पाठ के दूसरे भाग में देखेंगे, मरियम मगदलीनी के कब्र पर पहुंचने के बाद वह पतरस और यूहन्ना को लाने के लिए दौड़ गई। स्वर्गदूत के दूसरी स्त्रियों के साथ बात करने के समय वह उनके साथ नहीं थी। [53]उन्होंने ''मलमल के कफ़न को लपेटा हुआ'' देखा होगा (यूहन्ना 20:5), परन्तु लाश को नहीं। [54]जैसा कि सुसमाचार के वृत्तातों में अक्सर होता है, एक वृत्तांत दो''पुरुष'' बताता है (लूका 24:4) जबकि दूसरे केवल *एक* बताते हैं (मरकुस 16:5; मत्ती 28:5)। *एक* दोनों के लिए बात कर रहा लगता है। [55]यह जानने के लिए कि उसने क्या ''कहा'' था, देखें मत्ती 16:21; 17:23; 20:19; 26:32. इनमें से पहली दो आयतें लूका 24:6, 7 में स्वर्गदूत की बात पर लागू होती हैं। [56]यीशु ने पहले प्रतिज्ञा की थी कि वह अपने चेलों को गलील में मिलेगा (मत्ती 26:32)। उसने इस मुलाकात के लिए एक जगह बताई थी-उस पहाड़ पर (मत्ती 28:16)। इस तथ्य से कि उसके चेलों ने बाद में उसे गलील में देखना था कुछ चुने हुओं के शीघ्र ही उसे देखने की सम्भावना खत्म नहीं हुई। [57]कहीं पर, यीशु इन स्त्रियों को दिखाई दिया (मत्ती 28:9, 10), परन्तु हम नहीं जानते कि यह दर्शन चेलों को मिलने के लिए जाते हुए मार्ग में हुआ था या जब वे वहां से जा रही थीं। अधिक

जानकारी के लिए इस पुस्तक में आगे, ''विश्वास करने की कोशिश'' पाठ देखें। [58]मरकुस 16:8 के ''कुछ न कहा'' और लूका 24:9 के ''सब बातें कह सुनाईं'' में मेल करने का सबसे आसान ढंग यह है कि उन्होंने *उनके अलावा* जिनके पास स्वर्गदूतों ने उन्हें भेजा था, किसी और को कुछ नहीं बताया। [59]''ग्यारहों'' उस समय प्रेरितों को कहा गया है (यहूदा की जगह नियुक्ति से पहले), जैसे पहले सामान्य पदनाम के लिए ''प्रेरितों'' के लिए ''बारह'' (मरकुस 14:17) का इस्तेमाल किया जाता था। [60]क्लियोपास, जो स्पष्टतया स्त्रियों द्वारा चेलों को बताने के समय वहीं था (लूका 24:22, 23) ने कहा, ''हमारे साथियों में से कई एक कब्र पर गए, और जैसा स्त्रियों ने कहा था, वैसा ही पाया; परन्तु उसको न देखा'' (लूका 24:24)। इसका अर्थ यह हो सकता है कि उनमें से कुछ, जिन्हें स्त्रियों ने बताया था, निकलकर कब्र पर गए, परन्तु यह सम्भवतया पतरस और यूहन्ना के खाली कब्र में जाने की लूका की समीक्षा है (यूहन्ना 20:1-10)।

[61]हेस्टर, 225.

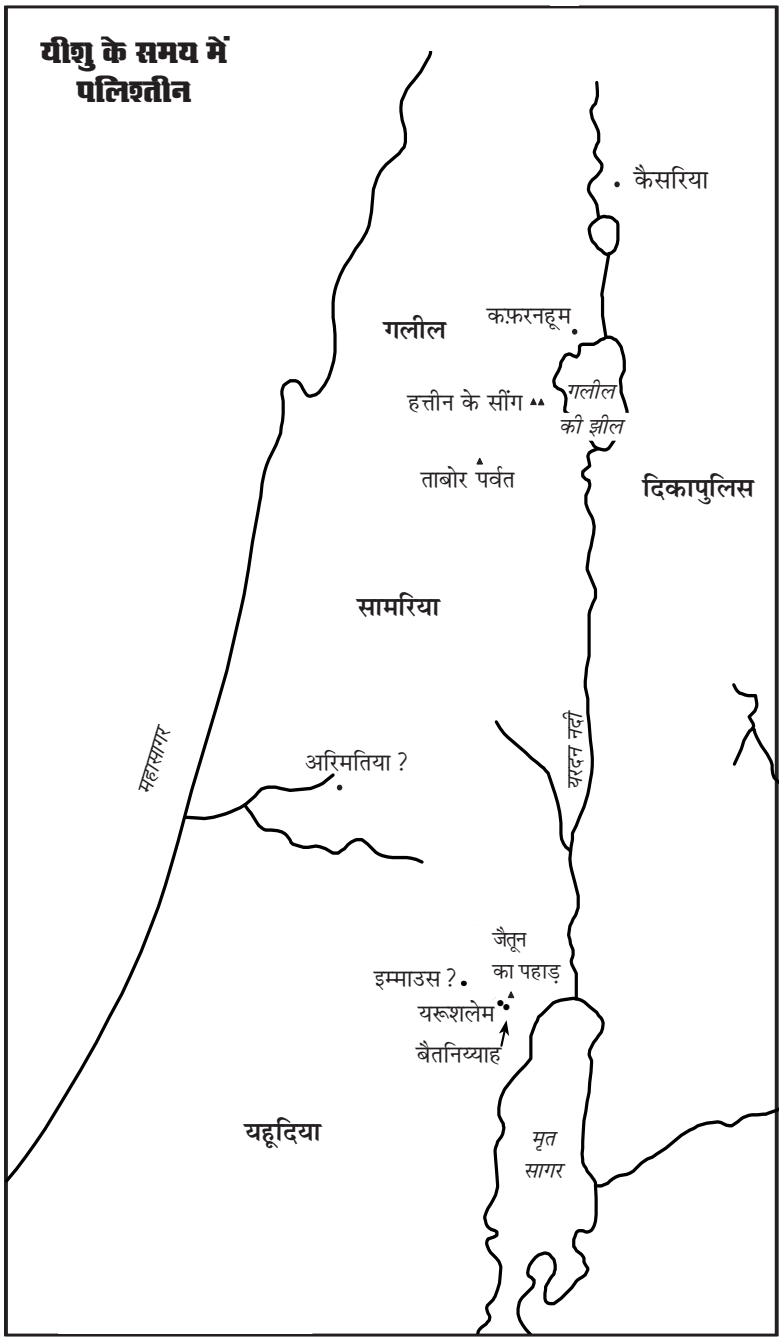
यीशु के समय में
पलिशतीन
कैसरिया
गलील
कफ़रनहूम
हत्तीन के सींग
गलील
की झील
ताबोर पर्वत
दिकापुलिस
सामरिया
महासागर
अरिमतिया ?
यरदन नदी
जैतून
का पहाड़
इम्माउस ?
यरूशलेम
बैतनिय्याह
यहूदिया
मृत
सागर